Ю Р
192
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1346/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 192

192

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

आज़ादी का डंका

जिसमें

चुने हुए जोशीले आदर्श-पूर्ण भजन एक बार पढ़ने
से ही तबियत फड़क उठनेवाली
कविताओं का संग्रह

तथा

महात्माजी की ११ शर्तें

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक

पं० विश्वनाथ शर्मा व क्षमाचन्द्र रस्तोगी
वैदिक - औषधालय,
राजादरवाजा, बनारस सिटी ।

प्रथमबार ४०००]   [मू० -)

रजिस्टर्ड तानसेन गोलियाँ—

खुशबूदार खुश ज़ायका लज़ीज़ मुफ़ीद है। प्यास, खाँसी, उबकाई, हैज़ा में निहायत फायदेमन्द है। पान के ज़ायके को बढ़ाती है। आवाज सुरीली तथा गला साफ़ रखती है। केवल सतों द्वारा बनाई जाती है। बड़े डाक्टरों, केमिकल एक्ज़ामिनरों से प्रशंसा-पत्र प्राप्त है। मूल्य ४० गोली ⌐), ८० =) २०० ।), ५००) ।।), १००० १)

हेड आफिस—तानसेन हाऊस,

जलालपुर जट्टाँ (पंजाब)

ब्रांच—वैदिक औषधालय,

राजादरवाजा, काशी।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 192
Date 3.12.71
GOVT. OF INDIA

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय, सरस्वती-प्रेस, काशी।

आज़ादी का डंका

(१)

तुम्हें शंख मोहन बजाना पड़ेगा,
ये भारत को फिर से जगाना पड़ेगा,
पड़े वीर आलस में सोते हुये जो,
उन्हें अब तो आकर जगाना पड़ेगा,
हुआ जा रहा है जो भारत यों गारत,
इसे आकर तुमको बचाना पड़ेगा,
छिड़ा युद्ध भारी अहिंसात्मक जो,
तुम्हें सारथी बन जिताना पड़ेगा,
हुये गिरफ्तार गांधी बाबा हमारे,
अब घर-घर में गांधी बनाना पड़ेगा,
छुड़ा के गुलामी से भारत को फौरन,
तुम्हें इनसे बदला चुकाना पड़ेगा,
जो मालो ख़जाना वो ढो ले गये हैं,
उसे फिर से वापस दिलाना पड़ेगा,
हुये हैं शहीदे वतन जितने अब तक,
उन्हें फिर से जग में बुलाना पड़ेगा।

(२)

भारत जननि तेरी जय तेरी जय हो।
हो वीर अरु धीर सन्तान माँ तेरी,
तेरी विजय-सूर्य माता उदय हो।
हों भीष्म-से धीर अर्जुन-सरिस वीर,
अकबर शिवाजी का फिर से उदय हो।
गांधी का सङ्कल्प पूरा करे ईश,
विघ्न और बाधा सभी का प्रलय हो।
आवें पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी,
सरिता-सरों में भी बहता प्रणय हो।
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार,
बेड़ी की झन्‌झन् में वीणा की लय हो।
गांधी रहें वो 'तिलक' याँ पै फिर आयें,
'अरबिंद' 'लाला' 'जितेन्द्र' का उदय हो।
शर्मा भनत आज हिन्दू-मुसलमान,
बोलो सभी मिल जननि तेरी जय हो।

(३)

भँवर के चक्कर से पार अब यह स्वतंत्रता का जहाज होगा।
वह दिन मुबारक है आनेवाला कि हिंद में जब स्वराज्य होगा॥
फ़िज़ूल ख़र्ची मिटेगी सारी, चलेगा चर्ख़ा, बनेगी खादी।
निहाल होंगे स्वदेश-भाई, जब अपना भारत में राज होगा॥

पड़े नशेबाज़ियों में जो थे, ख़बर न जिनको थी घर की मुतलक़ ।
वे होश में कुछ हैं आते जाते, ठिकाने जल्दी मिज़ाज होगा ॥
विना किए ये स्वतंत्र भारत, न चैन पल भर भी लेने देंगे ।
अभी खुजाते हैं दाद को वह, यही फिर आख़िर को खाज होगा ॥
नहीं ठहर सकते रागिए ये, बजाया मोहन ने राग आला ।
समाज सारा इधर ही होगा मिला हुआ सुर में साज होगा ॥
जिसे समझते थे मर्ज़ मोहलिक, वही अब आया समझ में आसाँ ।
मसीहा गांधी नज़र है आया कि जिसके ज़रिए इलाज होगा ॥
गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा पड़ा हुआ था स्वदेश भारत ।
प्रबल समय के प्रताप से अब, छुटेगी जल्दी सुकाज होगा ॥
बढ़ेगा धन-धान्य, मान-विद्या, अकाल से फिर सुकाल होगा ।
विनोद-आनंद होंगे घर-घर "सदा" जो सस्ता अनाज होगा ॥

(४)

थे हम भी कभी जाँबाज़ वतन, ऐ चर्ख़! हमें बरबाद न कर ।
ज़िंदा हैं मगर यह ज़ीस्त नहीं, अब और सितम ईजाद न कर ॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा, सब शान गई, नादार बने ।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र, नाशाद को क्यों तू शाद न कर ॥
जब गांधीजी ने ज़ोर दिया, जेलों के उधर दरवाज़े खुले ।
हम आहो बुका से काम जो लें, देते हैं डपट फ़रियाद न कर ॥
गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें, नादान खुशी से उछलने लगे ।
क्या जाल बिछाया हिकमत का, बातों में फ़क़त आज़ाद न कर ॥

कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा, दिया डंका बजा आज़ादी का।
हे कृष्णमुरारी, कर तू मदद, मज़लूम को अब बेदाद न कर॥

(५)

हिम्मत करो जवानो आज़ादे वतन हो,
उफ़! आपके होते हुए बरबादे वतन हो।
अफसोस अहले दर्द में उल्फत की बू न हो,
नफरत का दौर दौरा हो नाशादे वतन हो॥
कोठी भरे हैं माल से बाज़ार पटे हैं,
पर क्या मजाल एक भी आज़ादे वतन हो।
गान्धी के उसूलों पर हो खद्दर की असाफत,
इफलास मिटे कौम की इमदादे वतन हो॥
दुश्मन की क्या मजाल ज़रा आँख उठा ले,
तुम भीम बनो और यह फौलादे वतन हो।
जीतेन्द्र शहीदे क़ौम की मरकद की सदा है,
तुम क़ौम की तामीर में बुनियादे वतन हो॥
गुलचीं के दस्ते बुद से बरबाद चमन हो,
खूने जिगर से सींच लो आबादे वतन हो।
बुलबुल की तरह गुल की मुहब्बत में जान दो,
यक विर्दे ज़ुबाँ देश हो फर्यादे वतन हो॥
अहले नज़र के वास्ते गर शीरीं वतन हो,
हर फर्द वतन क़ौम का फरहादे वतन हो।

(६)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना॥
खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारो।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

(७)

यारो, वतन का तुमको जिस दिन ख़याल होगा।
तब दुश्मनों से अपना बाँका न बाल होगा॥
पीटेंगे पेट अपना इंगलैंड के जुलाहे।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा॥
जाना विदेश में जब अनाज का रुकेगा।
तब देखना हमारा घर माल माल होगा॥

जिस दिन करोगे दिल से बहिष्कार तुम विदेशी।
"दे दो स्वराज्य हमको" यह क्यों सवाल होगा ।।

(८)

इक लहर चला दी भारत में इन गान्धी टोपी वालों ने ।
स्वाधीन बनो यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने ।।
सदियों की गुलामी में फँसकर अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
सर्वस्व देश हित कर दो तुम अर्पण सपूत हो माता के ।
सर्वस्व त्याग ये मंत्र दिया इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
अनहित में भारत माता के जो लगे देश द्रोही बन कर ।
उनको सत्पथ पर चला दिया इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
पट बन्द हुये कितनी मिल के लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे-सा चक्र चलाया जब इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
रोते हैं विदेशी व्यापारी अपना सिर धुन चिल्लाते हैं ।
खद्दर से प्रेम किया जब से इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
आदर्श जो हैं इस भारत के दीनों के प्राण पियारे हैं ।
नेता गान्धी को बना लिया इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
अब मेल करो आपस में तुम जंज़ीर गुलामी की तोड़ो ।
माना गान्धी का कहना ये इन गान्धी टोपी वालों ने ।।
है विकट समस्या तीसकी भी उसको भी हल करना होगा।
ज़रिया बस एक निकाल लिया इन गान्धी टोपी वालों ने।।

युवकों के हृदय दुलारे हैं आँखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा इन गान्धी टोपी वालों ने॥
खुश हुआ दग्ध ये सुनकर के स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही इन गान्धी टोपी वालों ने॥

(९)

जिसकी मुद्दत से तमन्ना थी वह दिन आने को है।
फिर बहार आने को है ये गुञ्चा खिल जाने को है॥
काट गये हैं दासता की बेड़ियाँ सी० आर० दास।
लाजपत से "लाज" "पति" भारत की रह जाने को है॥
अब सुरस्सा होगा प्यारा हिन्द मोतीलाल से।
फिर "जवाहर" से खजाना अपना भर जाने को है॥
स्वर्ग से आकर करें तेरा तिलक भारत "तिलक"।
कर्मयोगी गान्धी अब वह शुभ समय लाने को है॥
जंग औ खूँ रेज़ियों से हाय भारत लुट गया।
बल अहिंसा से वही अधिकार फिर पाने को है॥

(१०)

उठा लो डेरा ऐ टोपवालो यहाँ तुम्हारा गुज़र नहीं है॥
जो मुद्दतों से यों सो रहे थे अब जग पड़े हैं वे शेर सारे।
मिटा रहे हैं महज़ खुमारी हुआ फज़र क्या खबर नहीं है॥
उठा लो डेरा ऐ टोपवालो यहाँ तुम्हारा गुज़र नहीं है॥

बजा के डंका निकल पड़े हैं मैदान जंग में आकर खड़े हैं ।
वतन हमारा मज़े उड़ाते हो तुम हमें अब सबर नहीं है ॥
उठा लो डेरा ऐ टोप वालो यहाँ तुम्हारा गुज़र नहीं है ॥
दिखाओ भाले चला दो गोली जकड़ दो बेड़ी हमें पकड़ के ।
झुला दो फाँसी पै जी चहे तो हमें जरा भी उजर नहीं है ॥
उठा लो डेरा ऐ टोप वालो यहाँ तुम्हारा गुजर नहीं है ॥
निकल पड़े हैं बढ़े चलेंगे हटेंगे पीछे न पैर हरगिज़ ।
अब तो वतन पै हम मर मिटैंगे दहल उठे वह जिगर नहीं है ॥
उठा लो डेरा ऐ टोप वालो यहाँ तुम्हारा गुज़र नहीं है ॥

(११)

नौकरी हम पर फिदा और हम फिदाये नौकरी ।
मरते दम तक भी न होगी इन्तहाये नौकरी ॥
हम गुलामों की भी कोई जिन्दगी है जिन्दगी ।
जिनकी रग रग में भरी होवे बलाये नौकरी ॥
चमड़ियाँ उधड़ें बला से जेल हो तो गम नहीं ।
कम नहीं फाँसी के तख्ते से सजाये नौकरी ॥
माँगते ही रह गये अल्लाह से हम यह दुआ ।
दम निकल जाये भले पै छुट न जाये नौकरी ॥
फिर भी किस्मत ने न मानी दे गई धोखा मुझे ।
कर रहे आज़ाद बैठे घर में हाय नौकरी ॥

(१२)

होनेवाला काम जो है वह भी हो ही जायगा।
जुल्म करते करते जालिम खुद बखुद मिट जायगा॥
कौन कहता है कि उनसे मामला हो जायगा।
हाँ ये माना रोज़े महशर फैसला हो जायगा॥
था किया ऐसा जुल्म अन्याय रावण दुष्ट ने।
राम ने जैसा किया था वैसा ही अब हो जायगा॥
कंस से बदला लिया था कृष्ण ने अन्याय का।
इंडियन यूरोपियन में वैसा ही हो जायगा॥
कृष्णजी के कर की मुरली रामचंदर का धनुष।
गाँधीजी के कर में चर्खा चक्र-सा हो जायगा॥
सत्य से होती विजय थी सब तरह के युद्ध में।
सत्य पर आरूढ़ हो स्वराज हो ही जायगा॥

(१३)

उठायेंगे जब वो तबर देख लेना।
तो लाखों उड़ायेंगे सर देख लेना॥
चलायेंगे जब कि वो तीरे सितम की।
तो हम होंगे सीना सिपर देख लेना॥
जो कल खुश्क शाखें तमन्ना थी अपनी।
उगायेंगे उसमें समय देख लेना॥
फलक के भी दिल में चुभेगा ये जाकर।

जो उठता है दर्दे जिगर देख लेना ॥
हिला देंगे पाय: ज़मीं आसमाँ के ।
करेंगे जो दिल से कहर देख लेना ॥
जो भारत की बेदी पै सर दे चुके हैं ।
वो होंगे जहाँ में अमर देख लेना ॥
खुलेंगी जुबानें जो अहले दहाँ से ।
तो आहों में क्या है असर देख लेना ॥
जो "गान्धी" वो "तैयब" हैं नेता हमारे ।
वही होंगे शमशो क़मर देख लेना ॥
जहाँ में जो रौशन हैं 'शायक़" के हासिद ।
वो होंगे चिरागेसहर देख लेना ॥

(१४)

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब ! सर अपना अबतो झुकाना होगा ॥
१ नशीली चीजें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं ।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥
२ हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा बढ़ा करके लूटते हो ।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा ॥
३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे जरा सुखी हों ।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा ॥
४ फिज़ूल-ख़र्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा ॥

५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा॥
६ स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पाव।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगान होगा॥
७ समुद्र तट का जहाजी बाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रखकर चलाना होगा॥
८ जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें।
बकाया क़ैदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब! छुड़ाना होगा॥
९ उठा लिये जाँय राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौ चौबिसदफा अलिफ है, उसेतोबिलकुल मिटाना होगा
१० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा॥
११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठादो, या करदो उसकोप्रजाकेताबे।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा॥

(१५)

उधर बन्दूक़ एयरोप्लेन गुरखे और बम होंगे।
इधर शौक़े शहादत में सरे तसलीम ख़म होंगे॥
यह माना उनकी जानिब से बहुत जौरोसितम होंगे।
हमारा तो अहिंसा धर्म होगा और हम होंगे॥
उधर दावा है छोड़ेंगे न हम हिन्दोस्ताँ हरगिज।
इधर है जोश अब तो हुक्मराने हिन्द हम होंगे॥

लड़ेगे जंग आज़ादी में यों हिन्दोस्ताँ वाले।
कलेजा होगा अर्जुन का तो, अंगद के क़दम होंगे॥

जवानाने वतन से भर दें सारे जेलखाने वह।
जब अपनी सल्तनत होगी, तभी आज़ाद हम होंगे॥
जिन्हें है देश से उलफ़त उन्हें किस बात का गम है।
खुशी से वह सहेंगे उनपे जो जौरोसितम होंगे॥
यह कहकर नौजवानाने वतन जेलों में जाते हैं।
यह सारे जेलखाने हिंद के दैरोहरम होंगे॥
हवाए हुब्बे कौमी बह रही है देश में "बेढब"
यक़ीं हैं अब बयाबाने वतन बाग़े अरम होंगे॥

(१६)

जो जख्म करने को उनके मक़तल में।
बर्छियों की अनी रहेगी॥
तो हम निशाने बनेंगे फिर भी।
हमारी गरदन तनी रहेगी॥
जो जुल्मबाजों की गन--मशीनें।
चलेंगी हम बेकसों के ऊपर॥
तो याखुदा मर मिटेंगे हम सब।
मगर यह हसरत बनी रहेगी॥
लोकाके भालों पै चाहे लोके या।
तोप ही दम न क्यों करा दे॥

मगर ये जीते जी हम कहेंगे।
ठनी है जो बस ठनी रहेगी॥
वो जुल्म ढालें हजारों मुझपर।
पै हम अहिंसा का व्रत करेंगे॥
करिश्मा भी उनका देख लेंगे।
कि कब तलक दुश्मनी रहेगी॥
मचल के पहलू में दिल है कहता।
कि हम हैं "शायक़" स्वतंत्रता के॥
तुम्हारी तोपों के बामुक़ाबिल।
हमारी ये लेखनी रहेगी॥

बिल्कुल नई चीज
अद्भुत आविष्कार

श्यामधारा

फायदा न हो तो
दाम वापस।

बेकार तथा नकली साबित करनेवाले को ५००) इनाम

इस दवा की एक शीशी हमेशा पास रखने से आप हर शिकायत से बच सकते हैं। रेल-जहाज़ की सफर में, घर में, देहातों में योग्य चिकित्सक का काम देती है। विविध अनुपानों द्वारा २२ मर्ज में काम आती है—जैसे सिर दर्द, दाँत-दर्द, बदन का दर्द, आँख का उठना, धुधलापन, जाला, नाखूना, रतौंधी हैज़ा, वमन, दस्त, बिच्छू के डंक पर, खुजली में फायदा पहुँचाती है। विशेष प्रशंसा बेकार है। जैसे, दोहा—"ग्रह, भेषज जल पवन पट पाय सुयोग कुयोग। होहि कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग।" अतः एक बार परिक्षा प्रार्थनीय है थोक खरीदार दूकानदारों से विशेष रियायत—मूल्य बड़ी शीशी ।।।) छोटा ।।) नमूना =)।

मिलने का पताः—

पं० विश्वनाथ शर्मा,
वैदिक औषधालय,
राजा-दरवाजा, बनारस सिटी।

नोट—एक रुपये से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती।